गांधी एवं स्वदेशी-विचार

डॉ अम्बिकेश कुमार त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंदीय विश्वविद्यालय
मोतीहारी, बिहार

स्वदेशी-विचार का जन्म भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दरम्यान हुआ। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि **'स्वदेशी' स्वतंत्रता आंदोलन का मूल-मंत्र था'** – चाहे वह शासन-प्रशासन का विषय हो या फिर आर्थिक प्रबंधन का। 19वीं सदी में दादा भाई नौरोजी के 'ड्रेन थ्योरी', रमेश चंद्र दत्त का 'भारत का आर्थिक इतिहास' या सखाराम गणेश देउस्कर की 'देसर कथा' जैसी पुस्तकों के केंद्र में औपनिवेशिक शासन द्वारा देशी संसाधनों के दोहन और देशी संसाधनों के ब्रिटेन भेजे जाने को लेकर प्रमुख चिंता व्यक्त की गई है। 1905 में बंग-भंग के खिलाफ आंदोलन भी स्वदेशी की भावना से ओतप्रोत था जब विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई थी। किन्तु स्वदेशी भाव-विचार को बहुआयामी और राष्ट्रीय स्वरूप देने का श्रेय महात्मा गांधी को जाता है, जब 1920 में उन्होने असहयोग आंदोलन की शुरुआत की। उन्होने स्वदेशी को न सिर्फ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और उनको जलाए जाने तक सीमित रखा बल्कि राष्ट्र-जीवन के प्रत्येक पहलू पर स्वदेशी का रंग चढ़ा दिया। उन्होने स्वदेशी को व्रत के रूप में स्वीकार किया।

स्वदेशी भाव-विचार को बहुआयामी और राष्ट्रीय स्वरूप देने का श्रेय महात्मा गांधी को जाता है, जब 1920 में उन्होने असहयोग आंदोलन की शुरुआत की। उन्होने स्वदेशी को न सिर्फ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और उनको जलाए जाने तक सीमित रखा बल्कि राष्ट्र-जीवन के प्रत्येक पहलू पर स्वदेशी का रंग चढ़ा दिया।

स्वदेशी की अवधारणा और गांधी:

महात्मा गांधी के स्वदेशी-विचार का आरंभ बिन्दु अपने पूर्ववर्ती स्वदेशी समर्थकों से भिन्न था। **गांधीजी ने उत्पादन-पद्धति को अपने स्वदेशी-विचार के केंद्र में रखा।** यूरोप में हुई मशीनी-क्रांति और औद्योगिकीकरण से समूचा विश्व चमत्कृत था। भारतीय स्वदेशी के समर्थक इस बात पर बल दे रहे थे कि ब्रिटेन में बनी वस्तुएँ हमारे देश में आकर बिकती हैं, जिससे हमारा धन ब्रिटेन में चला जाता है। इसलिए वैसी मशीनें और मिलों को भारत में स्थापित कर अपने देश में उत्पादन किया जाना चाहिए। इससे अपने देश का धन अपने देश में रह जाएगा। गांधीजी ने मेंचेस्टर की उत्पादन पद्धति की आलोचना करते हुए बड़े मशीनीकृत उद्योग-मिलों का विरोध किया और भारत के हिसाब से अपना वैकल्पिक स्वदेशी मॉडल विकसित किया जिसमें लघु और कुटीर उद्योगों को पुनर्गठित कर ग्राम-अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने और गांवों को आत्मनिर्भर बनाए जाने पर बल दिया गया। गांधीजी ने मशीनों के अत्यधिक चलन के भयावह परिणामों की ओर 1909 में अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में ही ध्यान आकृष्ट करवाया था। दरअसल गांधीजी के लिए स्वदेशी सर्वोदय को प्राप्त करने का एक जरिया है। गांधीजी की लड़ाई के कई मोर्चे हैं और वे बड़ी सफलता के साथ सभी मोर्चों को जोड़े रखते हैं, क्यूंकि उनका स्पष्ट उद्देश्य व्यक्ति का कल्याण था। इसीलिए **अपने किसी भी कृत्य या आंदोलन में उन्होने सनातनी नैतिकता का साथ कभी नहीं छोड़ा।** भारत अपने ताकत

डॉ अम्बिकेश कुमार त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंदीय विश्वविद्यालय
मोतीहारी, बिहार

के बल पर उन्नत कैसे बना रहे इसकी चिंता को दूर करने के लिए स्वदेशी जैसे विचार पर बल देना गांधीजी के लिए आवश्यक प्रतीत हुआ। इसीलिए **स्वदेशी का उनका विचार उत्कट राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ व्यावर्तक और समावेशी अंतरराष्ट्रवादी भी बन पड़ता है।** गांधीजी भारतीय अर्थव्यवस्था में हो रहे बदलाव से वाकिफ थे। लघु एवं कुटीर उद्योगों का ह्रास बड़े पैमाने पर हो रहा था। सभी व्यक्तियों को रोजगार कैसे मिले इसके लिए स्वदेशी को व्रत के रूप में अपनाने कि वकालत गांधीजी ने किया और चरखा को स्वदेशी का पहला हथियार बनाया।

गांधीजी सभी का उदय सभी के द्वारा उदय की कामना करते हैं, और यह कामाना स्वदेशी-विचार से संभव बन सकती थी। गांधीजी का स्वदेशी-विचार राष्ट्र और गांव को उन्नत बनाने का रहा है। **स्वदेशी अर्थात, स्वदेश में निर्मित वस्तु का उपयोग पड़ोसी से प्रेम का दर्शन है।** गांधीजी के अनुसार, स्वदेशी-विचार का पालन करने वाला हमेशा अपने आस-पास निरीक्षण करता है और जहां-जहां पड़ोसियों की सेवा की जा सकती है, यानी जहां उनके हाथ का तैयार किया हुआ जरूरत का माल होगा वहाँ बाहर का माल छोड़कर उसे लेगा। फिर भले ही स्वदेशी चीज पहले-पहल महंगी और घटिया दर्जे की हो। स्वदेशी को अपनाने वाला उसे सुधारने की कोशिश करेगा; स्वदेशी चीज खराब है इसलिए कायर बनकर परदेशी का इस्तेमाल करने नहीं लग जाएगा। स्वदेशी को परिभाषित करते हुए गांधीजी ने लिखा है कि "यह वह भावना है जो हमें आसपास की चीजों तथा सेवाओं का उपयोग करने को प्रेरित करती है तथा अधिक दूरदराज़ की चीजों/सेवाओं पर प्रतिबंध का बोध कराती है"। स्वदेश भावना वह भावना है जो हमें दूर-दराज के इलाकों को छोड़कर अपने समीपस्थ क्षेत्रों का उपयोग करने और उनकी सेवा करने तक सीमित करती है। इस प्रकार **स्वदेशी का सार है – समीपस्थ की पवित्र भाव से सेवा।** गांधीजी आम आदमी की घोर निर्धनता का सबसे बड़ा कारण आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में स्वदेशी का त्याग मानते है। यदि एक भी चीज भारत के बाहर से न खरीदी जाती तो इस देश में घी-दूध की नदियां बह रही होती, अर्थात गांधीजी देश का पैसा देश में ही स्वदेश विचार के द्वारा रखने की बात करते है।

- स्वदेशी का उनका विचार उत्कट राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ व्यावर्तक और समावेशी अंतरराष्ट्रवादी भी बन पड़ता है।
- गांधीजी सभी का उदय सभी के द्वारा उदय की कामना करते हैं
- स्वदेशी अर्थात, स्वदेश में निर्मित वस्तु का उपयोग पड़ोसी से प्रेम का दर्शन है।
- स्वदेशी का सार है – समीपस्थ की पवित्र भाव से सेवा।

गांधीजी लिखते हैं कि, "स्वदेशी का तात्पर्य उस भावना से है जो हमें अपने आसपास में निर्मित वस्तुओं के उपयोग तक से है। यह बाहर की वस्तुओं के प्रयोग का निषेध करता है। स्वदेशी एक धर्म है, एक कर्तव्य है जो हमें अपने पैतृक धर्म की सीमा में अनुबंधित करता है। अगर इसमें कोई दोष है तो इसे सुधारना चाहिए। राजनीति के क्षेत्र में केवल स्वदेशी संस्थाओं के प्रयोग से है तथा उसमें जो खामियाँ हैं उसे हटाकर उसके उपयोग से से है। आर्थिक क्षेत्र में

उन्हीं वस्तुओं के उपयोग से है जो आसपास में निर्मित होती हैं। तथा पड़ोस में बनने वाली चीजों की गुणवत्ता में सुधार व उपयोग से है"।

डॉ अम्बिकेश कुमार त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंदीय विश्वविद्यालय
मोतीहारी, बिहार

इस तरह **गांधीजी का स्वदेशी-विचार उपलब्ध आर्थिक विकल्पों को नैतिकता से जोड़कर मानवीय और समतामूलक समाज-व्यवस्था की नींव रखता है।** लेकिन स्वदेशी-विचार सीमित दायरे वाला भी नहीं है। जो चीज स्वदेश में नहीं बनती या बड़ी तकलीफ से बन सकती हो, उसे परदेश के द्वेष (डाह) के कारण वह अपने देश में बनाने लग जाए, तो उसको गांधीजी स्वदेशी-धर्म नहीं मानते है। स्वदेशी धर्म का पालन करने वाला परदेशी का द्वेष कभी नहीं करता है। इसलिए पूर्ण स्वदेशी में किसी का द्वेष नहीं है। वह संकुचित धर्म नहीं है। वह प्रेम से- अहिंसा से- निकाला हुआ सुंदर धर्म है। **गांधीजी कहते है** कि "मैं भारत के जरूरतमन्द करोड़ों निर्धनों द्वारा काते और बुने गए कपड़े को खरीदने से इंकार करना और विदेशी कपड़े को खरीदना पाप समझता हूँ, भले ही वह भारत के हाथ से कते कपड़े की तुलना में कितने ही बढ़िया किस्म का हो। स्वदेशी के सिद्धान्त का पालन करने पर यह कर्त्तव्य हो जाता है कि ऐसे पड़ोसियों की खोज होनी चाहिए जो हमारी आवश्यकता की वस्तुएं हमें दे सकें और यदि वे किन्हीं वस्तुओं का उत्पादन करने में असमर्थ हों तो उन्हें उपेक्षित प्रशिक्षण दें।...यदि ऐसा होगा तो भारत का प्रत्येक गांव लगभग स्वावलंबी और स्वत:पूर्ण हो जाएगा और वह दूसरे गांवों के साथ उन्हीं आवश्यक वस्तुओं की अदला-बदली करेगा जिनका उत्पादन संभव नहीं है। शिक्षा के मामले में भी स्वदेशी की भावना के घातक त्याग से देश को बहुत अधिक हानि पहुंची है। हमारे शिक्षित वर्ग की शिक्षा विदेशी भाषा के माध्यम से हुई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि वे आम जनता के साथ तादात्म्य नहीं कर पाए। वे आम-जनता का प्रतिनिधित्व करना चाहते हैं, लेकिन उसमें सफल नहीं हो पाते। आम लोग उसे उसी अपरिचय की दृष्टि से देखते हैं जिस दृष्टि से वे अंग्रेज़ अधिकारियों को देखते थे। दिल से जुड़ाव तो स्वदेश में स्वदेशी भाषा से ली गई शिक्षा में है"।

- गांधीजी का स्वदेशी-विचार उपलब्ध आर्थिक विकल्पों को नैतिकता से जोड़कर मानवीय और समतामूलक समाज-व्यवस्था की नींव रखता है।
- स्वदेशी धर्म का पालन करने वाला परदेशी का द्वेष कभी नहीं करता है।
- स्वदेशी संकुचित धर्म नहीं है। यह प्रेम से- अहिंसा से- निकाला हुआ सुंदर धर्म है।

गांधीजी का मानना है कि स्वदेशी में कोई स्वार्थ नहीं है; अगर है तो वह शुद्ध स्वार्थ है। शुद्ध स्वार्थ यानि परमार्थ; शुद्ध स्वदेशी यानि परमार्थ की आखिरी हद। जो व्यक्ति 'दूरस्थ दृश्य' के आकर्षणों में फँसकर दुनिया के दूसरे कोने तक सेवा करने के लिए भागता है, वह न केवल अपनी आकांक्षा की पूर्ति में असफल होता है बल्कि अपने पड़ोसियों के प्रति अपने कर्तव्य से भी विमुख होता है। गांधीजी का मानना है कि व्यक्ति एक ही साथ अपने पड़ोसियों और मानवता की सेवा कर सकता है; शर्त यही है कि पड़ोसियों की सेवा के पीछे स्वार्थ या अनन्यता का भाव न हो, अर्थात उसमें अन्य व्यक्तियों का शोषण निहित न हो। तब पड़ोसी भी

डॉ अम्बिकेश कुमार त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंदीय विश्वविद्यालय
मोतीहारी, बिहार

उस भावना को समझ सकेंगे जिस भावना से आप उनकी सेवा करना चाहते हैं। वे यह भी जान जाएंगे कि बदले में उन्हें भी अपने पड़ोसियों की सेवा करनी है। इस प्रकार इस सेवाभाव की गुणोत्तर वृद्धि होती जाएगी और यह समूची दुनिया को समाविष्ट कर लेगी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि स्वदेशी वह भावना है जो आपको अन्य लोगों की चिंता किए बिना अपने निकटस्थ पड़ोसी की सेवा के लिए प्रेरित करती है। शर्त यह यह कि, पड़ोसी भी, बदले में, अपने पड़ोसी की सेवा करे। इस अर्थ में, स्वदेशी में अनन्यता का कोई भाव नहीं है। गांधीजी कहते हैं' "**वास्तव में स्वदेशी ही एक ऐसा सिद्धान्त हैं जिसमें मानवता व प्रेम समाहित है।** स्वदेशी प्रेम और मातृभूमि की सेवा में है। मानव की सेवा हम अपने ज्ञान तथा जिस संसार में हम रहते हैं के दायित्व से अलग नहीं है। इसका मतलब है कि हम जिसे जानते हैं तथा पड़ोसी की सेवा के द्वारा देशवासियों की सेवा कर रहे हैं **सही मायने में यह मानवतावाद या मानवता से प्रेम के अलावा और कुछ नहीं है।**

- वास्तव में स्वदेशी ही एक ऐसा सिद्धान्त हैं जिसमें मानवता व प्रेम समाहित है।
- स्वदेशी मानवतावाद या मानवता से प्रेम के अलावा और कुछ नहीं है।
- स्वदेशी नफ़रत का एक पंथ नहीं है, यह एक आत्म-कम सेवा का मार्ग है जिसकी पृष्ठभूमि में अहिंसा व प्रेम है।
- गांधीजी का राष्ट्रप्रेम व्यावर्तक भी है और समावेशी भी।
- मेरा राष्ट्रवाद उतना ही व्यापक है जितना कि स्वदेशी – गांधीजी।
- गांधीजी का स्वदेशी-विचार स्वदेशी की सकारात्मक अवधारणा है।

'स्वदेशी नफ़रत का एक पंथ नहीं है, यह एक आत्म-कम सेवा का मार्ग है जिसकी पृष्ठभूमि में अहिंसा व प्रेम है'। इसीलिए स्वदेशी के लिए जीवन की इस योजना के तहत गांधीजी दूसरे सभी देशों को छोड़कर केवल भारत की सेवा कर किसी अन्य देश कोई क्षति नहीं पहुंचाना चाहते है। किन्तु अपने स्वदेशी-विचार में गांधीजी केवल इस वैज्ञानिक मर्यादा को स्वीकार किया गया है कि मनुष्य की सेवा करने की सामर्थ्य की भी एक सीमा है, अतः विदेश में निर्मित हर चीज को त्याज्य समझना स्वदेशी के अर्थ में गांधीजी की मंशा नहीं है। यही कारण भी रहा कि उन्होने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई लेकिन विदेशी रेल को उखाड़ने का आह्वान नहीं किया। इस प्रकार, **गांधीजी का राष्ट्रप्रेम व्यावर्तक भी है और समावेशी भी।** व्यावर्तक इस अर्थ में है कि गांधीजी पूरी विनम्रता के साथ अपना ध्यान अपनी जन्मभूमि तक सीमित रखते है और समावेशी इस अर्थ में है कि सेवा का स्वरूप स्पर्धात्मक या विरोधात्मक बिलकुल नहीं है। वे कहते हैं कि, **'मेरा राष्ट्रवाद उतना ही व्यापक है जितना कि स्वदेशी'।**

अंत में, स्वदेशी का अर्थ, गांधीजी के लिए, सभी विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से नहीं है। वे केवल स्थानीय संसाधनों के उपयोग की हद लागू करना चाहते हैं, विशेषकर गृह-उद्योग; जैसे कि हस्त-शिल्प, कुंभकार, आदि, जिनके बिना भारत उन्नति नहीं कर सकता है। इस तरह **गांधीजी का स्वदेशी-विचार स्वदेशी की सकारात्मक अवधारणा है।**